

Ganapati Atharva Sheersham in Bengali

Ganapati Atharva Sheersham – Bengali Lyrics (Text)

Ganapati Atharva Sheersham – Bengali Script

|| গণপংযথবশীর্ষোপনিষত (শ্রী গণেশাথবশীর্ষম) ||

ওং ভদ্রং কর্ণে'ভিঃ শূণ্যাম' দেবাঃ | ভদ্রং প'শ্বেমাঙ্কভিরজ'ত্রাঃ | স্থিরৈরগৈ'স্তুর্ভূবাং স'স্তুভিঃ' | বয়শে'ম
দেবহি'তং যদায়ুঃ' | স্বস্তি ন ইন্দ্রো' বৃদ্ধশ্র'বাঃ | স্বস্তি নঃ' পুষা বিশ্ববে'দাঃ | স্বস্তি নস্তাক্ষে'র্যা অরি'ষ্টনেমিঃ | স্বস্তি
নো বৃহস্পতি'র্দধাতু ||

ওং শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ' ||

ওং নম'স্তে গণপ'তয়ে | স্বমেব প্রংযক্ষং তস্ব'মসি | স্বমেব কেবলং কর্তা'২সি | স্বমেব কেবলং ধর্তা'২সি |
স্বমেব কেবলং হর্তা'২সি | স্বমেব সর্বং খন্দিদং' ব্রহ্মাসি | স্বং সাক্ষাদান্না'২সি নিংযম || 1 ||
স্ব'তং বচ্চিম | স'ংযং বচ্চিম || 2 ||

অব স্বং মাম | অব' বক্তারম'' | অব' শ্রোতারম'' | অব' দাতারম'' | অব' ধাতারম'' | অবানূচানম'ব শিষ্যম |
অব' পশ্চাতা''ত | অব' পুরস্তা''ত | অবোত্তরাতা''ত | অব' দক্ষিণাতা''ত | অব' চোক্ষরাতা''ত | অবাধরাতা''ত |
সর্বতো মাং পাহি পাহি' সমন্তাত || 3 ||

স্বং বাস্বয়'স্তুং চিন্ময়ঃ | স্বমানন্দময়'স্তুং ব্রহ্মময়ঃ | স্বং সচ্চিদানন্দা'২দ্বিতীয়ো'২সি | স্বং প্রংযক্ষং ব্রহ্ম'সি | স্বং
জানমযো বিজ্ঞান'ময়ো'২সি || 4 ||

সর্বং জগদিদং স্ব'ত্রো জায়তে | সর্বং জগদিদং স্ব'ত্ত্বিস্তিষ্ঠতি | সর্বং জগদিদং স্বয়ি লয়'মেষ্যতি | সর্বং জগদিদং স্বয়ি'
প্রংযতি | স্বং ভূমিরাপো'২নলো'২নি'লো নভঃ | স্বং চহারি বা''কপদানি || 5 ||

স্বং গুণত্র'য়াতীতঃ | স্বম অবস্থাত্র'য়াতীতঃ | স্বং দেহত্র'য়াতীতঃ | স্বং কালত্র'য়াতীতঃ | স্বং মূলাধারস্থিতো'২সি
নিংযম | স্বং শক্তিত্র'য়ালকঃ | স্বং যোগিনো ধ্যায়'স্তি নিংযম | স্বং ব্রহ্মা স্বং বিষ্ণুস্তুং রুদ্রস্তুমিন্দ্রস্তুমগ্নিস্তুং বায়ুস্তুং
সূর্যস্তুং চন্দ্রমাস্তুং ব্রহ্ম ভূর্ভুবঃ স্বরোম || 6 ||

गणादिं " पूर्वमुच्चार्य वर्णादीं " सुदनन्तरम् | अनुस्वारः परतरः | अर्धेन्दुलसितम् | तारेण शङ्कम् | एतत्तव
मनुस्वरूपम् | गकारः पूर्वरूपम् | अकारो मध्यमरूपम् | अनुस्वारश्चान्तररूपम् | बिन्दुरुत्तररूपम् | नादः
सङ्कानम् | सगंहिता सङ्किः | सैषा गणेशविद्या | गणक शशिः | निचुल्लयत्रीश्लः | श्री महागणपतिदेवता | ॐ
गं गणपतये नमः || 7 ||

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि |
तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् || 8 ||

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमं कुशधारिणम् | रदं च वरदं हस्तैर्विभ्राणं मूकध्वजम् | रक्तं लंबोदरं शूर्पकर्णकं
रक्तवाससम् | रक्तगङ्गानुलिङ्गाङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम् | भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् |
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतैः पुरुषाणपरम् | एवं ध्यायति यो निरयं स योगी योगिनां वरः || 9
||

नमो ब्राह्मणतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तु लघ्वादरायैकदन्ताय विद्मविनाशिने शिवसूताय श्रीवरदमूर्तये
नमः || 10 ||

एतदथर्वशीर्षं यो धीते | स ब्रह्मभूयाय कल्पते | स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते | स सर्वतः सुखमेधते | स
पञ्चमहापापात् प्रमुच्यते | सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति | प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति |
सायं प्रातः प्रयुञ्जानो पापोपापौ भवति | धर्मात्काममोक्षं च विन्दति | इदमथर्वशीर्षमिच्छ्याय न देयम् | यो
यदि मोहाद् दास्यति स पापीयान भवति | सहस्रावर्तनादयं यं काममधीते | तं तमनेन साधयेत् || 11
||

अनेन गणपतिमभिषिञ्चति | स वाग्मी भवति | चतुर्धामनग्नं जपति स विद्यावान् भवति | इत्यथर्वणवाक्यम् |
ब्रह्मादयाचरणं विद्यान् विभेति कदाचनेति || 12 ||

यो दूर्वाङ्कुरैर्जति स वैश्रवणोपमो भवति | यो लार्जैर्जति स यशोवान् भवति | स मेधावान् भवति | यो
मोदकसहस्रेण यजति स बाञ्छितफलमवाप्नोति | यः सायं समिद्धिर्जति स सर्वं लभते स सर्वं लभते || 13
||

अष्टौ ब्राह्मणान् सस्यगं ग्राहयिष्या सूर्यवर्चस्वी भवति | सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जम्बा सिद्धमञ्जो भवति |

মহাবিন্না"ত প্রমুচ্যতে | মহাদোষা"ত প্রমুচ্যতে | মহাপাপা"ত প্রমুচ্যতে | মহাপ্রংযবায়ী"ত প্রমুচ্যতে | স
সর্ববিদ্ভবতি স সর্ববিদ্ভবতি | য় এ'বং বেদ | ইংযু'পনিষ'ত || 14 ||

ওং ভদ্রং কণে'ভিঃ শূণ্যাম' দেবাঃ | ভদ্রং প'শ্বেমাক্ষভিরজ'ত্রাঃ | স্থিরৈরঙ্গৈ"স্তুৰ্ধুবাং স'স্তনুভিঃ' | বয়শে'ম
দেবহি'তং যদায়ুঃ' | স্বস্তি ন ইন্দ্রো' বৃদ্ধশ্র'বাঃ | স্বস্তি নঃ' পৃষা বিশ্ববে'দাঃ | স্বস্তি নস্তাক্ষে'র্যা অরি'ষ্টনেমিঃ | স্বস্তি
নো বৃহস্পতি'র্দধাতু ||

ওং শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ' ||

<http://ganesha-lord.blogspot.com/>